बहू की विदाई

(एकांकी)

9

पात्र-परिचय

मोहनलाल : एक धनी व्यापारी, *अवस्था*– पचास वर्ष।

सरिता देवी : मोहनलाल की पत्नी, अवस्था– छियालीस वर्ष।

सुरेश : मोहनलाल का पुत्र, अवस्था– बाईस वर्ष।

ललिता : सुरेश की पत्नी, अवस्था– उन्नीस वर्ष।

नितेश : ललिता का भाई, अवस्था– तेईस वर्ष।

(कमरा आधुनिक ढंग से सजा है। सामने की ओर बाएँ कोने में रेडियो और दाएँ कोने में पुस्तकों का रैक है। कमरे के बीच में सोफा-सेट है। छोटी गोल मेज पर सुंदर फूलदान रखा है। कमरे में दो द्वार हैं। सामने वाला द्वार अंदर जाने के लिए है और बाईं ओर का द्वार बाहरी बरामदे में खुलता है। दोनों पर पर्दे पड़े हैं। दाईं ओर खिड़की है जो खुली हुई है।

पर्दा उठने पर मोहनलाल द्वार के समीप खड़े हुए दिखाई पड़ते हैं। वे बाहर की ओर देख रहे हैं। भरे चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। सिर गंजा है। धोती-कुर्ता पहने हैं। मुख पर गंभीरता और *समृद्धि* के चिह्न हैं।

उनसे कुछ दूर हटकर ही नितेश विनम्र भाव से खड़ा है। वह पैंट और शर्ट पहने है। चेहरे पर *निराशाजन्य* करुण भाव हैं।)

नितेश : (आगे बढ़कर धीमे स्वर में) क्या निर्णय लिया आपने?

मोहनलाल : विदा नहीं होगी।

नितेश : लेकिन जरा सोचिए तो। यदि आपने विदा नहीं की, तो बहन की क्या दशा होगी?

मोहनलाल : मैंने उसकी दशा का ठेका नहीं लिया है।

नितेश : हर लड़की पहला सावन अपनी सखी-सहेलियों के साथ हँस-खेलकर बिताने का सपना देखती है।

मोहनलाल : जानता हूँ।

(मोहनलाल सोफे पर बैठकर जम्हाई लेते हैं, मानो नितेश की बातों से ऊब रहे हों)।

नितेश : यह जानकर भी ...?

मोहनलाल : अपना निर्णय सुना चुका हूँ। विदा नहीं होगी।

नितेश : यदि मैं ललिता को बिना लिए ही गया तो माँ का हृदय टूट जाएगा।

मोहनलाल : मैं मजबूर हूँ। अगर माँ-बहन का इतना ही ख्याल था, तो दहेज पूरा क्यों नहीं दिया?

नितेश : (दीन स्वर में) अपनी *सामर्थ्य* के अनुसार जितना भी हो सका, हमने दे दिया। फिर भी, अगर ...!

मोहनलाल : (कड़े स्वर में) अगर तुम्हारी सामर्थ्य कम थी, तो अपनी बराबरी का घर देखते। झोंपड़ी में रहकर महल से नाता क्यों जोड़ा?

नितेश : (हाथ जोड़कर) जी ...?

मोहनलाल : (उठकर *आवेश* से टहलते हुए) देना तो दूर, बारात की खातिर भी ठीक नहीं की गई। मेरे नाम पर जो धब्बा लगा, मेरी शान को जो ठेस पहुँची, भरी बिरादरी में जो हँसी हुई उस करारी चोट का घाव आज भी हरा है। जाओ, कह देना अपनी माँ से कि अगर बेटी विदा कराना चाहती हैं तो पहले उस घाव के लिए मरहम भेजें।

नितेश : जी ... इस समय तो आप विदा कर दें। हम गौने में आपकी हर माँग पूरी करने की चेष्टा करेंगे।

मोहनलाल : मैंने दुनिया देखी है, नितेश! ये बाल धूप में सफेद नहीं हुए हैं और तुम...। (उत्तेजित स्वर में) कल के छोकरे मुझे बेवकूफ बनाना चाहते हो!

नितेश : यह आप क्या कह रहे हैं?

मोहनलाल : ठीक कह रहा हूँ। मेरा फैसला आखिरी है। विदा तभी होगी जब पाँच हजार नकद (दायाँ हाथ फैलाकर) इस हाथ पर रख दोगे।

नितेश : (आवेश में) यह तो *सरासर* अन्याय है। शिकायत आपको हमसे है। उस भोली-भाली लड़की ने आपका क्या बिगाड़ा है जो विदा न करके आप उससे बदला ले रहे हैं? अगर सुरेश बाबू होते...!

(इतने में कमरे में सरिता देवी का प्रवेश)

सरिता देवी : मुझसे शर्म कैसी? मेरे लिए जैसा सुरेश वैसे ही तुम। बोलो, कितना रुपया चाहते हैं वे?

नितेश : जी ... जी रुपए की तो कोई बात नहीं, वे तो ...।

सरिता देवी : (नितेश की ओर *गूढ़ दृष्टि* से देखती हुई) बोलो, कितना रुपया लेकर वे विदा करने को तैयार हैं? चुप क्यों हो, बताओ।

नितेश : (धीमे और उदास स्वर में) पाँच हजार।

सरिता देवी : बस? मैं देती हूँ तुम्हें रुपए। उनके मुँह पर मारकर कहना कि यह लो कागज के रंग-बिरंगे टुकड़े, जिन्हें तुम आदमी से ज्यादा प्यार करते हो (उठकर सामने वाले द्वार की ओर बढ़ती हुई) मैं अभी लाती हूँ।

नितेश : (उठकर) ठहरिए माँ जी। (सरिता देवी रुक जाती है और मुड़कर नितेश की ओर देखती है)।

नितेश : मुझे रुपए नहीं चाहिए। मैं बिना विदा कराए ही जा रहा हूँ। (ललिता उसी प्रकार मूर्तिवत् बैठी है।)

सरिता देवी : (लौटती हुई) यह क्या कह रहे हो, बेटा? मेरे रहते विदा न हो, यह कभी नहीं हो सकता। मैं माँ हूँ, माँ के दिल को समझती हूँ (भारी स्वर में) जिस तरह उतावली होकर मैं गौरी की राह देख रही हूँ उसी तरह तुम्हारी माँ भी ललिता की राह देख रही होगी। नहीं, विदा जरूर होगी। तुम अकेले नहीं जाओगे।

(कमरे से कुंजियों का गुच्छा निकालकर ललिता की ओर बढ़ती हुई) जा बेटी, तिजोरी से रुपए निकाल ला।

(ललिता गुच्छा लेने के लिए हाथ आगे नहीं बढ़ाती। नितेश खिड़की की ओर मंद गति से बढ़ता है)।

सरिता देवी : जाती क्यों नहीं? (गुच्छा ललिता के हाथ में थमाती हुई) जल्दी कर!

(ललिता उठकर 'माँ जी' कहती है और फिर सिसकने लगती है। सरिता देवी 'मेरी बेटी' कहकर उसे हृदय से लगा लेती है)।

मोहनलाल : (बाहर से) अरे, सुनती हो? गौरी के आने का समय हो गया है। तुमने स्वागत की कोई तैयारी नहीं की?

सरिता देवी : (ललिता से) जा बेटी, तू अंदर जा।

(ललिता अंदर जाती है। नितेश बाहर वाले द्वार की ओर देखता है जिधर से मोहनलाल आते हैं)।

मोहनलाल : अरे, तुम यहाँ खड़ी हो? जरा तैयारी करो स्वागत की! जरा यह भी देख लें कि नाकवाले बेटी का स्वागत कैसे करते हैं!

सरिता देवी : (चिढ़कर) ताने कसने के अलावा कभी सीधी बात नहीं निकलती तुम्हारे मुँह से? जब देखो, तब बेढंगी बातें!

मोहनलाल : यह लो! इसमें कौन-सी गाली दे दी मैंने?

सरिता देवी : तुम समझते हो कि दुनिया में एक तुम्हीं नाकवाले हो और सब नकटे हैं?

मोहनलाल : तुम्हें तो मेरी हर बात में बुराई ही बुराई दिखाई देती है। नितेश, तुम्हीं बताओ, मैंने कोई बुरी बात कही है?

नितेश : (धीरे-धीरे आगे बढ़ता हुआ) ठीक ही कहा है आपने। आज के युग में पैसा ही नाक और मूँछ हैं। जिसके पास पैसा नहीं वह नाक और मूँछ होते हुए भी नकटा है, मूँछकटा है।

(नेपथ्य से हॉर्न का स्वर)

सरिता देवी : (प्रसन्न स्वर में) आ गई मेरी गौरी। (सरिता देवी से) अरे, तुम खड़ी-खड़ी मेरा मुँह क्या देख रही हो? अंदर से मिठाई का थाल लाओ।

(उसी प्रकार खड़ी रहती है। उसकी दृष्टि बाहर वाले द्वार की ओर है। नितेश भी उसी ओर देख रहा है। अंदर वाले द्वार के पर्दे की ओट में ललिता खड़ी है। बाहर से उसका हाथ दिखाई पड़ रहा है। मोहनलाल बड़े उत्साह से द्वार की ओर बढ़ते हैं। तभी बाहर से सुरेश आता है। वह इकहरे बदन का सुंदर नवयुवक है। पैंट और कमीज पहने है। हाथ में बरसाती कोट है। चेहरे पर *उदासी* के चिह्न हैं। बरसाती कोट *कोच* पर रखकर चुपचाप खड़ा हो जाता है।)

मोहनलाल : (बाहर वाले द्वार का पर्दा हटाकर बाहर झाँकने के बाद घबराए हुए स्वर में) गौरी कहाँ है?

सुरेश : (धीमे स्वर में) वह नहीं आई।

मोहनलाल : नहीं आई? क्यों, तबीयत तो ठीक है उसकी?

सुरेश : जी हाँ?

मोहनलाल : फिर?

सुरेश : उन्होंने विदा नहीं की।

(सरिता देवी *हतप्रभ*-सी कोच पर बैठ जाती है। ललिता के हाथ में कंपन होता है, जिससे पर्दा हिलता जाता है। नितेश बड़े ध्यान से मोहनलाल की ओर देख रहा है।)

मोहनलाल : जैसे किसी ने छाती पर घूँसा मार दिया हो। विदा नहीं की? क्यों नहीं की विदा?

सुरेश : कह रहे थे, दहेज पूरा नहीं दिया गया।

मोहनलाल : (बिगड़कर) हमने तो जीवनभर की कमाई दे दी और उनकी नजर में दहेज पूरा नहीं गया? लोभी कहीं के!

सरिता देवी : (उठकर) उन्हें क्यों भला-बुरा कह रहे हो? बेटी वाले चाहे अपना घर-द्वार बेचकर दे दें, पर बेटे वालों की नाक-भौंह सिकुड़ी रहती हैं।

मोहनलाल : मगर शराफत और इंसानियत... !

सरिता देवी : (बीच में ही) अब शराफत और इंसानियत की दुहाई देते हो? कुछ देर पहले तो... !!

मोहनलाल : चुप रहो तुम!!

सरिता देवी : बहुत चुप रही, अब नहीं रहूँगी। आखिर क्या कमी है बहू के दहेज में? मगर तुम हो कि...

मोहनलाल : (अनसुनी करके) मेरी बेटी को विदा न करके उन्होंने मेरा अपमान किया है। मैं... मैं... !

सरिता देवी : अब भी आँखें नहीं खुलीं? जो व्यवहार अपनी बेटी के लिए तुम दूसरों से चाहते हो, वही दूसरे की बेटी को भी दो। जब तक बहू और बेटी को एक-सा नहीं समझोगे, न तुम्हें सुख मिलेगा और न शांति।

(मोहनलाल बेचैनी से इधर-उधर टहलते हैं। वे हाथ मल रहे हैं। सिर नीचे झुका है। नितेश सुरेश के पास जाकर खड़ा हो जाता है।)

मोहनलाल : बहू और बेटी! बेटी और बहू!! अजीब उलझनें हैं। कुछ समझ में नहीं आता।

सरिता देवी : अगर बेटे वाला यह याद रखे कि वह बेटीवाला भी है तो सब उलझनें सुलझ जाएँ।

मोहनलाल : (रुककर पत्नी की ओर देखते हुए) ....शायद तुम ठीक कहती हो।

नितेश : (आगे बढ़कर धीमे स्वर में) अब मुझे आज्ञा दीजिए, बाबूजी।

मोहनलाल : (चौंककर) ऐं ... !!

नितेश : मेरी गाड़ी का समय हो रहा है। मैं जा रहा हूँ। (द्वार तक आता है फिर घूमकर) मैं जल्दी आऊँगा। विश्वास रखें, इस बार आपकी चोट के लिए मरहम लाना न भूलूँगा।

मोहनलाल : (दुःखी स्वर में) ठहरो नितेश, मुझे लज्जित न करो बेटा! मेरी चोट का इलाज बेटी की ससुराल वालों ने दूसरी चोट से कर दिया है।

नितेश : (लौटता हुआ, आश्चर्य से) बाबूजी... !!

मोहनलाल : (*निःश्वास* छोड़कर) कभी-कभी चोट भी मरहम का काम कर जाती है, बेटा!

(सरिता देवी की ओर मुड़कर) अरे, खड़ी-खड़ी हमारा मुँह क्या ताक रही हो? अंदर जाकर तैयारी क्यों नहीं करतीं? बहू को विदा नहीं करना है क्या?

(ललिता का हाथ पर्दे की ओट में हो जाता है। वह हर्ष के आँसू पोंछती हुई शीघ्रता से अंदर आती है। सुरेश और नितेश मुस्कुराकर एक-दूसरे की ओर देखते हैं। मोहनलाल मंदगति से खिड़की की ओर बढ़ते हैं)

(धीरे-धीरे *यवनिका* गिरती है।)

शब्द-अर्थ

अवस्था — उम्र *(age)*,

निराशाजन्य — निराशा के कारण उत्पन्न होने वाला *(disappointed)*,

समृद्धि — संपन्नता *(prosperity)*,

सामर्थ्य — शक्ति *(capacity)*,

आवेश — भावना का वेग *(with anger, angrily)*,

सरासर — पूर्ण रूप से *(entirely)*,
उदासी — खेद, दु:ख *(sorrow)*,
हतप्रभ — हैरान *(shocked)*,
यवनिका — पर्दा *(curtain)*।
गूढ़ दृष्टि — गंभीर दृष्टि *(deep sight)*,
कोच — बेड, खाट *(coach)*,
नि:श्वास — दु:ख भरी लंबी साँस *(expiration)*,

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

गंभीरता	समृद्धि	निराशाजन्य	जम्हाई	सामर्थ्य	उत्तेजित	मूर्तिवत्
कुंजियों	स्वागत	इंसानियत	लज्जित	आश्चर्य	नि:श्वास	शीघ्रता

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने कितने पात्रों का परिचय दिया है?

(ख) लेखक का इस एकांकी में क्या उद्देश्य है?

(ग) एकांकी में किस विषय पर चर्चा हुई है?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) मोहनराम नितेश से नाराज था–

☐ व्यवहार के कारण ☐ कम दहेज लिए जाने के कारण ☐ अवस्था के कारण

(ख) बहू की विदा के लिए मोहनराम ने माँग की–

☐ पाँच हजार रुपयों की ☐ गाड़ी की ☐ घर की

(ग) गौरी को उसके ससुराल वालों ने–

☐ मायके भेज दिया ☐ मायके नहीं भेजा ☐ कुछ नहीं

2. सही वाक्यों के सामने (✓) और गलत के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) मोहनराम लालची व्यक्ति था। ☐

(ख) सरिता देवी कठोर स्वभाव की थी। ☐

(ग) नितेश झगड़ालू था। ☐

(घ) सुरेश गौरी का भाई था।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मोहनराम नितेश के किस अनुरोध को नहीं मान रहा था?

(ख) सरिता देवी ने नितेश की किस प्रकार सहायता करनी चाही?

(ग) मोहनराम किस घटना के बाद बहू को विदा करने के लिए तैयार हो गया?

(घ) एकांकी में किस सामाजिक बुराई के बारे में चर्चा हुई है?

भाषा-ज्ञान

1. वाक्यों के इन अंशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए–

(क) लालच करने वाला – .....

(ख) विनय करने वाला – .....

(ग) सहायता करने वाला – .....

(घ) जिस पर आरोप लगा हो – .....

2. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) नाक ऊँची करना – .....

.....

.....

(ख) नाक कटाना – .....

.....

.....

क्रियात्मक गतिविधि

- इस एकांकी का अभिनय मित्रों के साथ कीजिए।
- 'दहेज की समस्या और समाधान' इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।